इकाई 5 शासन, सरकार और शासकीयता*

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 सरकार

5.3 शासन

5.4 शासकीयता

5.5 सरकार, शासन और शासकीयता के बीच अंतर्संबंध

5.6 सारांश

5.7 शब्दावली

5.8 उपयोगी पुस्तकें

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप :

- सरकार, शासन और शासकीयता को परिभाषित कर सकेंगे;
- सरकार, शासन और शासकीयता के बीच अंतर को समझ सकेंगे;
- सरकार, शासन और शासकीयता के बीच संबंधों को समझ सकेंगे; और

5.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने सत्ता और प्राधिकार की चर्चा की। इस इकाई में, हम सरकार, शासन और शासकीयता पर चर्चा करेंगे। हम सरकार, शासन और शासकीयता के बीच के अंतर्संबंधों को देखेंगे।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी (2019) नीति, कार्यों, और मामलों के संचालन (एक राज्य, संगठन या लोगों का अधिकार) को शासन के रूप में परिभाषित करता है। शासन के तरीकों ने सरकार, शासन और शासकीयता जैसी तीन अवधारणाओं को जन्म दिया है जो एकसमान सी प्रतीत होती हैं लेकिन वे 'शासन के संबंधों' को व्यवस्थित करने के तरीकों के कारण भिन्न होते हैं'। इस इकाई में, हम शासन की इन तीनों अवधारणाओं के बारे में जानेंगे। सरकार, शासन और शासकीयता सत्ता में रहने वाले लोगों के काम के तरीकों का अध्ययन करेंगे। एक स्तर पर राजनीतिक वैज्ञानिकों ने शासन को सरकार (स्टोकर, 1998:17) का पर्याय माना, लेकिन उनमे से अधिकांश ने उन्हें विश्लेषणात्मक रूप से अलग शब्द मानता है। बेवीर और रोड्स (2003:45) ने शासन को 'सरकार के प्रकृति या अर्थ में परिवर्तन' के रूप में परिभाषित किया। फूको (2000) ने सरकार को 'व्यवहार के आयोजन' के रूप में

* डा. महिमा नायर, स्वतंत्र शोधार्थी द्वारा लिखित

परिभाषित किया। दूसरी ओर, शासकीयता 'सरकार और प्रशासन के कार्यकाल और कला के विशिष्ट मनोवृत्तियों को अलग करने का प्रयास है, जो कि 'प्रारंभिक आधुनिक' यूरोप से उभरा है, जबकि सरकार शब्द का उपयोग मानव व्यवहार के निर्णायक दिशा के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में किया जाता है (डीन, 1999:2)। इन अवधारणाओं की जाँच से हमें सत्तासीन लोगों के स्वभाव को समझने में मदद मिलती है – चाहे सत्ता केंद्रीकृत हो या विकेंद्रीकृत। इसके केंद्र में, शासन पर बहस मूल रूप से इससे संबंधित है कि कौन या क्या समाज को मजबूत करता है। इस प्रकार, एक 'सरकार' के दृष्टिकोण से, 'समाज एक नमूना के रूप में सरकार के मार्गदर्शन के बिना खुद को अधिक स्वसंचालित करता है' (पीटर्स, 2000:36)। 'सरकार' और 'शासन' दोनों दृष्टिकोणों में शासकीयता की अवधारणा शामिल है क्योंकि यह अवधारणा शासन संचालन में प्रयुक्त विधियों से संबंधित है।

इन अवधारणाओं की तलाश करते हुए हम फूको (1977–78) द्वारा उठाए गए प्रश्नों के उत्तर ढूँढते हैं "कैसे, किसके द्वारा, किस हद तक और किन तरीकों से शासित हों।" व्यक्तिगत रूप से इन अवधारणाओं की खोज करने के बाद, हम तीनों के अंतर्संबंधों पर चर्चा करेंगे और विभिन्न दृष्टिकोणों के उदय के कारणों का संक्षेप में अध्ययन करेंगे।

5.2 सरकार

सरकार वो साधन है जिसके द्वारा संगठनात्मक नीति निर्धारण और उसको लागू करने के लिए एक तंत्र बनाया जाता है। प्रत्येक सरकार का अपना एक संविधान होता है, जिसमें उसके प्रशासकीय सिद्धांतों और दर्शन का विवरण होता है। सामान्यतः, इसमें निहित दर्शन व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सिद्धांत और सम्पूर्ण राज्य सत्ता (अत्याचार) के विचार के बीच संतुलन स्थापित करता है। इसमें आम तौर पर एक विधायिका, कार्यकारी और न्यायपालिका शामिल होती है जो इस संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है।

सरकार भी कम या ज्यादा व्यवस्थित, विनियमित और शक्ति के प्रतिबिंबित तरीकों ("तकनीक") का प्रतीक भी है जो तर्क के विशिष्ट रूप ("तार्किकता") में दूसरों के ऊपर शक्ति के सहज प्रयोग से परे होती है, जो किसी क्रियाविधि को परिभाषित करती है। सरकार ऐसे में "कमोवेश आचरण का नियमन उचित तकनीकी साधनों का तर्कसंगत अनुप्रयोग करती है" (हिन्देस 1996:106)। इसे सत्ता प्रयोग की संस्था के रूप में देखा जा सकता है। शक्ति दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता है और सत्ता ऐसा करने का अधिकार देता है और इसलिए यह वैध शक्ति है। वेबर आज्ञाकारिता के विभिन्न आधार पर सत्ता के तीन प्रकार का वर्णन करते हैं; पारंपरिक सत्ता इतिहास में निहित है, करिश्माई सत्ता व्यक्तित्व से और कानूनी–सत्ता अवैयक्तिक नियमों के एक समूह द्वारा स्थापित होता है। सरकार का अध्ययन करना सत्ता प्रयोग का अध्ययन करना है।

फूको ने सरकार की अवधारणा को वृहद किया और इसे नियोजित गतिविधियों का एक समूह माना, जिसका उद्देश्य लोगों के विचारों, कार्यों और भावनाओं को आकार देना था। उन्होंने 'सरकार' को बाहरी ताकत के रूप में नहीं देखा; बल्कि इसमें लोगों के 'स्व–संचालित' गतिविधियों को संलग्न बताया, जो अपने अन्तर्निहित सत्य के शासन द्वारा संचालित होते हैं (फूको, 2000)। वे सरकार शब्द के पुराने अर्थ के साथ सरकार की धारणा के व्यापक अर्थ का उपयोग करते हैं और शक्ति के रूपों प्रक्रियाओं के वस्तुकरण के बीच घनिष्ठ संबंध को स्थापित करते हैं। जबकि वर्तमान समय में सरकार शब्द का सीधा तात्पर्य राजनीति से है, फूको यह साबित करते हैं कि 18 वीं शताब्दी तक सरकार की समस्या को सामान्य समझा जाता था। सरकार न केवल राजनीतिक, बल्कि दार्शनिक, धार्मिक,

चिकित्सा और शैक्षणिक सन्दर्भों में भी प्रयोग हुआ है। राज्य या प्रशासन के प्रबंधन से इतर, "सरकार" ने आत्म–नियंत्रण, परिवार एवं बच्चों के लिए मार्गदर्शन, घरेलू प्रबंधन, आत्मा के निर्देशन इत्यादि की समस्याओं को भी दर्शाया है। इसी कारण, फूको सरकार को व्यवहार या अधिक सटीक शब्दों में कहें तो "व्यवहार का व्यवहार" के रूप में परिभाषित करते हैं, इस तरह एक शब्द के रूप में सरकार का अर्थ "आत्म–नियंत्रण" से लेकर "दूसरों के नियंत्रण" तक होता है। फूको के अनुसार, सरकार का अध्ययन का एक स्पष्ट नैतिक आयाम है, 'यदि नैतिकता को अपने कार्यों के लिए खुद को जिम्मेदार मानने के प्रयास के रूप में समझा जाता है, या ऐसा प्रचलन जिसमें मानव अपने व्यवहार से खुद को स्वयं–संचालित करता है' (डीन, 1999:11)।

5.3 शासन

शासन सरकार की तुलना में एक व्यापक शब्द है। अपने व्यापक अर्थ में, यह उन विभिन्न तरीकों को संदर्भित करता है जिनसे सामाजिक जीवन समन्वित होता है। यूएनडीपी (2006) के अनुसार, "शासन को सारे स्तरों पर किसी देश के मामलों का प्रबंधन करने के लिए आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक प्राधिकार के रूप में देखा जा सकता है। इसमें तंत्र, प्रक्रियाएँ और संस्थान शामिल हैं, जिसके जरिये नागरिक और समूह अपने हितों, कानूनी अधिकारों का उपयोग, दायित्वों को पूरा करने के साथ–साथ मतभेदों के बीच मध्यस्थता होती है। विश्व बैंक (1992) ने शासन को "उन परंपराओं और संस्थानों के रूप में परिभाषित किया है जिनके द्वारा किसी देश में जन हित के लिए अधिकार का प्रयोग किया जाता है। इसमें शामिल हैं:

(i) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा सत्तासीन लोगों का चयन, निगरानी और प्रतिस्थापन किया जाता है,

(ii) संसाधनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और मजबूत नीतियों को लागू करने की सरकारी की क्षमता और

(iii) आर्थिक और सामाजिक सहभागिता को संचालित करने वाले संस्थानों के प्रति नागरिकों और राज्य का सम्मान।

शासन प्रणाली सिद्धांतों पर टिकी होती है जिसमें शामिल हैं: पारदर्शिता, जिम्मेदारी, जवाबदेही, भागीदारी और लोगों की जरूरतों के प्रति जवाबदेही। प्रभावी शासन न केवल सरकारी संस्थानों के सुधार, बल्कि सेवाओं के कुशल वितरण में बाजार तंत्र की संभावित भूमिका के तर्क का साथ देती है। निजी क्षेत्र और नागरिक समाज राजनीतिक संस्थानों की सीमा को संकुचित करती है। सुशासन यह सुनिश्चित करता है कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताएँ समाज में व्यापक सर्वसम्मति पर आधारित हों और विकास संसाधनों के आवंटन पर निर्णय लेने में सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों की आवाज सुनी जाए। शासन के तीन मुख्य घटक हैं: आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक। आर्थिक शासन में निर्णय लेने की प्रक्रिया शामिल होती है जो किसी देश की आर्थिक गतिविधियों और अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ उसके संबंधों को प्रभावित करती है। यह स्पष्ट रूप से समता, गरीबी और जीवन की गुणवत्ता के लिए परमावश्यक है। राजनीतिक शासन नीति निर्माण के लिए निर्णय लेने की प्रक्रिया है। नौकरशाही शासन नीति कार्यान्वयन की प्रणाली है।

तीनों को शामिल करते हुए, सुशासन उन प्रक्रियाओं और संरचनाओं को परिभाषित करता है जो राजनीतिक और सामाजिक–आर्थिक संबंधों को जोड़ते हैं। शासन राज्य को शामिल

करता है, लेकिन यह निजी क्षेत्र और नागरिक समाज संगठनों को शामिल कर राज्य से वृहत हो जाता है।

शासन एक ऐसी व्यवस्था का सूचक है जिसके द्वारा एक संगठन या समूह निर्देशित और प्रबंधित किया जाता है, जबकि शासन की अवधारणा से इतर सरकार राष्ट्र के एक औपचारिक राष्ट्र राज्यों (कुलफील्ड और होल्ट, 2012) को दर्शाता है। शासन को समाज और राज्य को जोड़ने वाली व्यवस्था के रूप में भी परिभाषित किया जाता है, जहां सार्वजनिक मामलों, कुशल उपयोग और समानता और नीति निर्माण द्वारा समाज की जरूरतों की पूर्ति कर मूल संसाधनों के विभाजन से संबंधित मुद्दों को ढूँढकर नियोजित किया जाता है। ऐसा शासन के अभिकरणों को सशक्त बनाकर और संक्षिप्त और लंबे समय में सुशासन को बढ़ावा देने वाले तंत्र स्थापित करने में उनकी भूमिकाओं और प्राथमिकताओं को परिभाषित कर किया जाता है (स्टोकर, 1998)। नव–उदारवाद की व्यापक रूपरेखा के कारण शासन के विचार पर जोर दिया गया जहाँ राज्य की भूमिका पर पुनर्विचार किया जा रहा है। राज्य के मुख्य कार्यों का निजीकरण किया गया और अधिक प्रभावी समस्या–समाधान तंत्र बनाने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी का विचार पेश किया गया। शासन को समाज संचालन में केंद्र सरकार की क्षमता में गिरावट से जोड़ दिया गया। स्टोकर के अनुसार (1998:17), शासन का तात्पर्य 'उन कार्यप्रणालियों के उद्भव से है जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच की सीमाएँ धुंधली हो गई हैं'। पियरे और पीटर्स (2000: 83–91) का तर्क है कि राज्य अपनी निर्देशन की क्षमता खो रहा है क्योंकि नियंत्रण क्षेत्रीय से अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में उर्ध्वमुख (upward), क्षेत्रों से होते हुए अविकसित इलाकों में अधोमुख (downward) की ओर; और अंतर्राष्ट्रीय निगमों, गैर–सरकारी संगठनों और अन्य निजी या अर्ध–निजी निकायों के लिए बहिर्मुखी है। स्टोकर (1998:26) मानते हैं कि शासन 'अतीत से अतीव दूरी' को दिखाता है, 'बड़ी सरकार' (पियरे और पीटर्स, 2000:25) के युग में 'मजबूत राज्य' था, फिर समान रूप से शासन का उग्र रूप सामाजिक अभिकरणों (स्काउट और जॉर्डन, 2005) का आत्म–आयोजन और समन्वय है। मूल रूप से, ये सम्बन्धन केवल सरकारी नीति, बल्कि सरकार के कार्यप्रणाली को भी प्रभावित करते हैं' (स्टोकर, 1998:23)। वे इस अर्थ में स्वयं को 'व्यवस्थित' कर रहे हैं कि वे सक्रिय रूप से सरकारी हस्तक्षेप का विरोध करते हैं (रोड्स, 2000:61)। ओस्बोर्न और गेबलर (1992) के लोकप्रिय अंतर को देखते हुए, 'स्टीयरिंग' (नीति लक्ष्यों को निर्धारित करना) और 'रोइंग' (उपकरणों के चयन और उपयोग के माध्यम से उन लक्ष्यों को वितरित करना) शासन नीति निर्धारण भी करती है और लागू भी करती है।

शासन की अवधारणा ने नए समूहों को नीति निर्माण में शामिल होने की शक्ति दी; हालाँकि ये नए समूह पूरी आबादी के प्रतिनिधि नहीं थे। हैरिस (2007) के अनुसार, शासन में "नई राजनीति" ने गरीबों को सक्रिय तत्त्वों के रूप में बाहर रखा, भले ही संगठन उनके लिए काम करने का दावा करते रहे। 'उत्तर–वाशिंगटन सहमति' में निर्धारित शासन के मुद्दों में निजीकरण, विकेंद्रीकरण, नागरिक समाज की भागीदारी और सामुदायिक भागीदारी शामिल है। शासन का मुद्दा उदारीकरण की केंद्रीय समस्या का समाधान करता है। यह राज्य की गतिविधियों की संभावनाओं को कम करने और निजी क्षेत्र या नागरिक समाज की गतिविधियों को विकसित किया, हालाँकि शासन की जरूरत तब भी थी। उदाहरण के लिए, हैरिस बताते हैं कि समकालीन शासन एजेंडा शहरी गरीबों की निरंतर समस्या से निपटने के लिए संसाधनों के पुनर्वितरण माध्यम से नहीं, बल्कि विकेंद्रीकरण और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से उन्हें "सशक्त" बनाने का प्रस्ताव रखता है। वे बताते हैं कि 'शासन' के विचार से वास्तव में सत्ता और संसाधनों का समान वितरण नहीं हुआ है। इसके बजाय सत्ता कुछ समूहों (आमतौर पर मध्यम वर्ग की पृष्ठभूमि के शिक्षित लोगों

तक) में केंद्रीकृत हो गई है जो 'गरीब' के लिए बोलते हैं। उन्होंने चेन्नई में वकालत करने वाले गैर सरकारी संगठनों का उदाहरण दिया, जिसका उद्देश्य झुग्गी निवासियों को नागरिक होने का एहसास कराना तो था (उदाहरण के लिए उन्हें विकेन्द्रीकृत शहरी सरकार में सम्पूर्ण रूप से भागीदारी के लिए सक्षम बनाना), लेकिन आवास के अधिकार और जीविका के संघर्षों में उनका समर्थन किए बिना।

शासन की अवधारणा 1980 के दशक के नवउदारवाद के "मजबूत" बनावट भारत में आर्थिक उदारीकरण से उत्पन्न हुई। वर्तमान में, अर्थव्यवस्था और समाज निर्माण में राज्य की जिम्मेदारी को संकुचित करने वाला यह विचार आगे नहीं बढ़ सका क्योंकि अंततः सफल बाजारू अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए और सांस्थानिक परिस्थितियों की स्थापना के लिए राज्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है (हैरिस, 2007)।

5.4 शासकीयता

फूको के निबंध शासकीयता में तर्क है कि एक निश्चित मानसिकता, जिसे उन्होंने शासकीयता कहा, राजनीतिक विचार और कार्रवाई के सभी आधुनिक रूपों का सामान्य आधार बन गयी थी। इसका संबंध सरकार के 'कैसे' से है– शासन कैसे किया और सोचा जाता है। इसमें सरकार की गतिविधियाँ और प्रचलन शामिल हैं... शब्द 'शासन/मानसिकता' में शासन की प्रक्रियाओं और सरकार की मानसिकता दोनों को संदर्भित किया गया है – अर्थात् यह सोचकर कि शासन कैसे किया जाता है। यह एक कला (एक प्रचलन) और तार्किकता (सरकार के बारे में सोचने का एक तरीका) दोनों है (गॉर्डन, 1991)।

शासकीयता को फूको द्वारा आत्म–नियंत्रण के लिए "स्वायत्त" व्यक्ति की क्षमता का अध्ययन के रूप में देखा गया है और यह किस प्रकार कैसे यह राजनीतिक शासन और आर्थिक शोषण के रूपों से जुड़ा हुआ है। इस अवधारणा को शुरू करने में फूको ने शक्ति की अवधारणा को अनदेखा नहीं किया लेकिन यह 'एक क्रांतिकारी सैद्धांतिक बदलाव की वस्तु थी' (फूको, 1985:6)। शासकीयता की दृष्टि से, सरकार में एक निरंतरता होती है, जो राजनीतिक शासन से आत्म–नियंत्रण के रूपों के माध्यम से फैलती है, अर्थात् फूको के शब्दों में "स्व की तकनीकों" (फूको, 1988)। अब सरकार की धारणा का इस्तेमाल स्व की तकनीकों और वर्चस्व के तकनीकों के बीच संबंधों की जाँच के लिए किया जाता है (फूको, 1988)। शासकीयता में सरकार की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें एक स्पष्ट नैतिक जुड़ाव है जो स्व–नियंत्रण को जगाता है। शासकीयता में किसी व्यक्ति को कोई बाहरी शक्ति नियंत्रित नहीं करती।

जिन तरीकों से जनसंख्या को नियंत्रित किया जाता है, वे सरकार की चिंता का एक प्रमुख विषय है। राजनीतिक शक्ति की अवधारणा राज्य की गतिविधियों, प्राथमिकताओं और निर्णयों की तुलना में व्यापक और अधिक जटिल है। इसमें यह भी शामिल है कि कैसे विभिन्न समूह या ज्ञान के रूप और व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों के जीवन को नियंत्रित एवं गठित करते हैं।

फूको (1977–78:144) ने "शासकीयता" को तीन तरीकों से समझाया –

I- संस्थानों, प्रक्रियाओं, विश्लेषणों और प्रतिबिंबों, गणनाओं, और रणनीति का एक मजबूत गठजोड़ जो इस विशिष्ट एवं जटिल शक्ति के इस्तेमाल को संभव बनाती है, जिसका लक्ष्य जनसंख्या है, राजनीतिक अर्थव्यवस्था इसके ज्ञान का प्रमुख रूप है, और सुरक्षा के विभिन्न तंत्र इसके प्रमुख तकनीकी उपकरण हैं।

II- प्रवृत्ति, बल की रेखा, जो लंबे समय तक, और पूरे पश्चिम में, लगातार अन्य सभी प्रकार की शक्ति जैसे कि संप्रभुता, अनुशासन, और इसी तरह की शक्तियों के प्रकार की ओर अग्रसर रही है – जिसे हम "सरकार" कह सकते हैं और जिसके कारण एक ओर विशिष्ट सरकारी तंत्रों की श्रृंखला का विकास हुआ है, और दूसरी ओर ज्ञान की एक कड़ी का विकास हुआ।

III- प्रक्रिया, या यों कहें, इस प्रक्रिया का परिणाम जिसके द्वारा मध्य युग के न्यायिक राज्य पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में प्रशासनिक कानून बन गए, धीरे–धीरे उनका "सरकारीकरण" हो गया।

'गठजोड़' के संदर्भ में, फूको सरकार के बारे में बात करते हैं; सरकार की गतिविधियों या प्रचलनों या यहां तक कि 'सरकार का खेल' – एक कला है, जिसके द्वारा कुछ लोगों को दूसरों के शासन को सिखाया जाता है और जिससे कुछ खुद को शासित होने देते हैं। सरकारों के शासन और मानसिकता की प्रक्रियाओं को समझने की कोशिश ने नवउदारवाद के युग में प्रमुखता प्राप्त की क्योंकि सरकार की भूमिका का मूल्यांकन फिर से होने लगा। शासकीयता की धारणा के माध्यम से "राज्य का ह्रास" के लिए नव–उदारवादी मुहिम (एजेंडे) को सरकार की तरकीब के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। केनेसियनवाद का संकट और कल्याणकारी राज्य हस्तक्षेप के रूपों में कमी के कारण राज्य की नियंत्रण की शक्तियों में कमी आती है, जिससे राज्य खुद को पुनर्संगठित एवं पुनर्संरचित करता है, जिससे राज्य की नियामक क्षमता 'जिम्मेदारी' और 'तार्किकता' का प्रभार व्यक्तियों पर डाल दिया जाता है। नवउदारवाद में व्यक्ति विशेष और "विशिष्ट" मामलों और समस्याओं के समाधान में सक्रिय रूप से भाग लेने की संभावना के साथ सामूहिक "व्यक्तिगत" आपूर्ति और वांछित स्वायत्तता के लिए अधिक गुंजाइश है, जो पहले विशेष रूप से राज्य के अभिकरणों के अधीन माना जाता था। इसमें भागीदारी सुनिश्चित करने का एक मूल्य है: व्यक्तियों को स्वयं इन गतिविधियों और संभावित विफलता के लिए जिम्मेदारी निभानी होगी (बर्चेल्ल, 1993, 275–6)। राज्य से व्यक्ति एवं समूह के प्रति उत्तरदायित्व का स्थानांतरण सरकार से शासन के तरफ एक आंदोलन के रूप में देखा गया। इन दोनों प्रकार के शासन में शामिल प्रचलन शासकीयता के दायरे में आती हैं।

5.5 सरकार, शासन और शासकीयता के बीच अंतर

शासन और शासकीयता दोनों आधुनिक समाज में व्यक्तियों, संगठनों, प्रणालियों, राज्य और बड़े पैमाने पर समाज के संबंध में दिशा, निर्देश, शासन, संचालन आदि की समस्याओं का मूल्यांकन करते हैं। उन दोनों का राज्य से सीधा संबंध है हालांकि यह संबंध अलग परंपराओं एवं मुख्य क्षेत्रों से है। शासन विशेष रूप से राज्य या सरकार की भूमिका पर अंतरराष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निकायों के प्रभाव की पड़ताल करता है और पारंपरिक रूप से राज्य के प्रमुख कार्यों एवं विभिन्न क्षेत्रों पर इन नए विन्यासों के दूरगामी निहितार्थ की पड़ताल करता है।

वर्तमान समकालीन भारत में विविध क्षेत्रों में ये नए विन्यास और बनावट स्पष्ट हैं। भारत ने 1990 के दशक में राजनीतिक और आर्थिक सुधारों की एक श्रृंखला के साथ उदारीकरण की शुरुआत की, जिसने व्यापार और घरेलू उत्पादन को निष्क्रिय कर दिया और स्थानीय रूप से निर्वाचित निकायों, नागरिक समाज के अभिनेताओं और सामान्य नागरिकों (गुप्ता और शिवरामकृष्णन 2012) को विकेंद्रीकृत शक्ति प्रदान की। राजनीतिक शक्ति का विचलन कई स्व–सहायता समूहों के विकास और लोगों की "भागीदारी" और "सशक्तिकरण" (सान्याल, 2009) के आधार पर नए विकासवादी मुद्दों पर हुआ।

शासन को एक समन्वय तंत्र के रूप में, "सरकार की एक नई शैली जो मिश्रित सार्वजनिक निजी निर्णय लेने वाले जाल में राज्य और गैर–राज्य अभिकारकों के बीच सहयोग और सहभागिता की एक बड़ी श्रेणी की विशेषता" देखा जा सकता है (मेन्ट्ज 1999, सीएफ शियावो, 2014:181)। यह परिभाषा अवधारणा की गुंजाइश को रेखांकित करते हुए, उदार नैतिकता को धूमिल करती है जो इस शासकीय 'मानसिकता' को जीवंत बनाती है। शासन की अवधारणा में फूकोवादी अवधारणा ने एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के विकास में योगदान दिया है और शासन के अध्ययन यह बताता है कि कैसे सत्ता में पहले से मौजूद शासन व्यवस्था अक्सर कुछ प्रकार के हितधारकों की 'भागीदारी' का नेतृत्व करती है। सत्ता के संस्थागत रूपों की "वंशावली" हमें सरकार की 'मानसिकता', तरीकों की जांच करने की अनुमति देती है जो शासन की कल्पना, अवधारणा, प्रतिनिधित्व और ज्ञान के निकाय पर आधारित है, एवं इसके दायरे, मापदंड और विशेषताओं को परिभाषित करता है। सरकार के अध्ययन को सरकार के तीन ध्रुवों से पहचाना जाता हैः सरकार की एक "मानसिकता" के संज्ञानात्मक, तकनीकी और नैतिक तत्व, जो एक विशिष्ट शक्ति 'उपकरण डिस्पोजिट' को आकार देते हैं, अर्थात सत्य नियम (सामूहिक विमर्श जो सामाजिक वास्तविकता का निर्माण करते हैं), नियंत्रण (तकनीक, उपकरण, प्रथाओं), व्यक्तिपरकता के रूप (सामूहिक और व्यक्तिगत पहचान)। फूको संस्कृतिः शास्त्रीय सभ्यताओं में नागरिकता की अवधारणा से लेकर प्रारंभिक ईसाई देहाती मार्गदर्शन तक एक उदार सरकार की तर्कसंगतता जो समाज पर अपने उत्पादक 'कार्यों में सीमित' है जो "जीवन" शासन का लक्ष्य और उद्देश्य बन जाता है, यानी नव उदारवादी 'सरकार के रूपों के लिए एकाधिकार, जिसमें से सरकार के बिना शासन' एक घटक हिस्सा है जैसे शासन की वंशावली का पता लगाते है (फूको, 2005)।

नव–उदारवादी शासन की 'समालोचना' के लिए सरकारी दृष्टिकोण के समेकित मूल्य में तार्किकता के रूपों को समझने की क्षमता प्रत्येक शक्ति चित्रण में शासकीय मनोवृति से शुरू होकर इसमें निहित होने वाले कारकों में सरकार के इन रूपों का विश्लेषण करने में अन्तर्निहित है। इसका अर्थ है कि शक्ति को निर्धारित करने वाले तत्त्वों में उन्हें ही परिभाषित करने वाले विमर्श, तकनीक और नैतिकता शामिल हैं। किसी अवधारणा की आलोचकीय क्षमता इसमें निहित विखंडन और सवाल करने की क्षमता में समाहित हैं। इस संबंध में, मेरलिंगन का मानना है, "इस तरह के विश्लेषण का प्रभाव अपने स्वयं के स्पष्ट, सामान्य या प्राकृतिक चरित्र के राजनीतिक शासन को रोकना है, जो इसके संचालन के लिए आवश्यक है" (इत्यादि, 2006, शियावो, 2014:187)।

सरकारी दृष्टिकोण, सरकार के प्रतिमान के बिना शासन की अवधारणा का गंभीर रूप से विश्लेषण करने में मदद करता है और अपने राजनीतिक चरित्र का अनावरण करने यानी "सामाजिक व्यवस्था को एक बाहरी के बिना एक बंद सार्वभौमिक स्व–प्रसार प्रणाली के रूप में पुनः व्यवस्थित करने का प्रयास" में मदद करता है। (प्रोजोरोव, 2007: 39, सी.एफ. शियावो, 2014: 187)। यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि नव–उदारवादी प्रतिमान के संदर्भ में, 'शासन' राज्य की भागीदारी और सशक्तिकरण के नाम पर इसे गैर–जिम्मेदार बनाता है। यह गैर–जिम्मेदाराना रवैया अक्सर आबादी के उन वर्गों पर हानिकारक प्रभाव डालती है जो शक्ति और संसाधन से रहित हैं। शासन के मानसिकता को समझना भेदभावपूर्ण शासकीय प्रथाओं में बदलाव लाने का पहला कदम है।

बोध प्रश्न I

i) सरकार, शासन और शासकीयता के बीच क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

a) फूको ने संस्थानों, प्रक्रियाओं, विश्लेषणों और प्रतिबिंबों, गणनाओं, और रणनीति द्वारा ..... के रूप में शासकीयता को परिभाषित किया।

b) शासकीयता के केंद्र में ..... है।

c) ..... , ... और ..... शासन के प्रमुख तत्त्व हैं।

d) सरकार के अध्ययन में, हम .....का अध्ययन करते हैं।

iii) 'सरकार' के अवधारणा का आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

यह इकाई शासन की प्रक्रिया के विभिन्न तरीकों को प्रस्तुत करती है। इस इकाई के अंत तक आपको पता चल जाएगा कि सरकार आमतौर पर शासन के लिए संरचनाओं और प्रक्रियाओं को संदर्भित करती है, शासन का मतलब सरकार से दूर सत्ता का विकेंद्रीकरण और शासन की प्रक्रिया में अन्य अभिकारकों की भागीदारी है। शासकीयता 'सरकार की कला' है या सरकार और शासन दोनों को कैसे चलाया जाता है। शासन में अंतर अपने युग विशेष में विद्यमान आर्थिक सिद्धांतों और वास्तविकताओं से प्रभावित होता है। नव–उदारवादी प्रतिमान बहुत प्रभावशाली रहा है। हालांकि यह दावा खारिज हो चुका है कि मुक्त बाजार सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करेगा। इसलिए, यह मान्यता है कि किसी भी समग्र और न्यायसंगत विकास के लिए राज्य की सक्रिय भूमिका बहुत आवश्यकता है।

5.7 शब्दावली

बायोपॉलिटिक्स : बायोपॉलिटिक्स मिशेल फूको द्वारा प्रतिपादित सामाजिक सिद्धांतों का अवधारणा है, जिसके अंतर्गत रणनीतियों, तंत्रों एवं मानव जीवन प्रक्रियाओं (दौड़, प्रजनन, स्वास्थ्य, चिकित्सा, प्रजनन इत्यादि) का उल्लेख किया जाता है।

वंशावली : फूको ने वंशावली को "वर्तमान के इतिहास" के रूप में

परिभाषित किया, अर्थात, सरकार की तार्किकता के इतिहास का गंभीरता से पड़ताल करना। वर्तमान के अध्ययन के संबंध में वंशावली 'विधि' "निदान योग्य" है।

कीनेसियनवाद : कीनेसियन अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था में कुल खर्च और उत्पादन और मुद्रास्फीति पर इसके प्रभाव का एक आर्थिक सिद्धांत है। केनेसियन अर्थशास्त्र को 1930 के दशक में महामंदी को समझने की कोशिश में ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड केन्स ने विकसित किया था। कीन्स ने मांग को प्रोत्साहित करने और वैश्विक अर्थव्यवस्था को मंदी से बाहर निकालने के लिए सरकारी खर्चों को बढ़ाने और कम करों की वकालत की।

नव–उदारवाद : राष्ट्रों के बीच व्यापार को सरल बनाने वाली विचारधारा और नीति नमूना है। यह मुनाफे और दक्षता को बढ़ाने के लिए हमेशा सस्ता संसाधन खोजने के लिए माल, संसाधनों और उद्यमों की अबाध गति पर ध्यान देता है। मानव प्रगति के लिए निरंतर आर्थिक विकास, मुक्त बाजार के लिए संसाधनों का कुशल आवंटन, आर्थिक और सामाजिक मामलों में न्यूनतम राज्य हस्तक्षेप और व्यापार और पूंजी की स्वतंत्रता के लिए अपनी प्रतिबद्धता इसकी कुछ मुख्य विशेषताएं है।

वर्चस्व की तकनीकियाँ : वर्चस्व व्यक्तियों के आचरण और किसी प्रकार के हित के लिए जनता के वस्तुनिष्ठता की सोच से निर्धारित होता है।

5.7 उपयोगी पुस्तकें

Bevir, M. and Rhodes, R. 2003.Interpreting British Governance. London: Routledge.

Dean, M. 1999. Governmentality: Power and Rule in Modern Society, London: Sage.

Foucault, M. 1977-78. Security, Territory, Population: Lectures at the College De France, edited by Michel Senellart, Palgrave Macmillan: UK.

Gupta, Akhil, and Kalyanakrishnan Sivaramakrishnan. 2012. The State in India

after Liberalization. London: Routledge

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

i) सरकार आमतौर पर शासन के लिए संरचनाओं और प्रक्रियाओं को संदर्भित करती है, शासन का मतलब सरकार से दूर सत्ता के विकेंद्रीकरण और शासन की प्रक्रिया में अन्य अभिकारकों की भागीदारी है। शासकीयता 'सरकार की कला' है कि सरकार और शासन दोनों को कैसे चलाया जाता है।

ii) a) समन्वय

b) जनसंख्या का विनियमन

c) आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक

d) सत्ता

iii) शासन की अवधारणा यह सुनिश्चित करने के लिए सामने आई कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताएं समाज में व्यापक सहमति पर आधारित हैं और विकास संसाधनों के आवंटन पर निर्णय लेने में सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों की आवाज सुनी जाती है। इसमें तंत्र, प्रक्रियाएं और संस्थान शामिल हैं, जिसके माध्यम से नागरिक और समूह अपने हितों को स्पष्ट करते हैं, अपने कानूनी अधिकारों का उपयोग करते हैं, अपने दायित्वों को पूरा करते हैं और अपने मतभेदों का मध्यस्थता करते हैं। हालाँकि, नए समूहों को शक्ति देने में कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं, शासन ने गरीबों को सक्रिय तत्त्वों के रूप में बाहर रखते हुए सत्ता और संसाधनों को सबमें बराबर वितरित नहीं किया।

संदर्भ सूची

Bevir, M. and Rhodes, R. 2003.Interpreting British Governance. London: Routledge.

Burchell, G. 1993. 'Liberal government and techniques of the self', in: Economy & Society, 22(3): 267-82.

Caulfield T & Hort K. (2012). Governance and stewardship in mixed health systems in low?and middle?income countries. In H. P. H. F. K. H. The Nossal Institute for Global Health (Ed.), Working paper series (Vol. 24).

Dean, M. 1999. Governmentality: Power and Rule in Modern Society, London: Sage.

English Oxford Living Dictionaries, available at https://en.oxforddictionaries.com/definition/govern, accessed on June 2, 2019.

Foucault, M. 1977-78. Security, Territory, Population: Lectures at the College De France, edited by Michel Senellart, Palgrave Macmillan: UK.

Foucault, M.2000. '"Omnes et Singulatim": Toward a Critique of Political

Reason', in Faubion, J.D. (Ed.), Power: The Essential Works of Foucault Volume 3, New York: The Free Press: 298-325.

Foucault, M.1988. 'Technologies of the Self' (A seminar with Michel Foucault at the University of Vermont, October 1982), in: L. H. Martin, H. Gutman, P. H.

Hutton (eds.), Technologies of the Self. A seminar with Michel Foucault, Amherst: University of Massachusetts Press.

Gordon, C. (1991). 'Governmental Rationality: An Introduction', in G Burchell et al, The Foucault Effect: Studies in Governmentality, University of Chicago Press: Chicago: 1, 28 and 34.

Gupta, Akhil, and Kalyanakrishnan Sivaramakrishnan. 2012. The State in India

after Liberalization. London: Routledge

Harriss, J. 2007. Antinomies of Empowerment: Observations on Civil Society, Politicsand Urban Governance in India, Economic and Political Weekly, Special Articles, June 30, 2007.

Hindess, Barry 1996: Discourses of Power. From Hobbes to Foucault. Oxford: Blackwell.

Osborne, D. and Gaebler, T. (1992) Re-inventing Government. Reading MA: Addison-Wesley

Peters, B. G. (2000) 'Government and Comparative Politics', in J. Pierre (ed.), Debating Governance.Oxford: Oxford University Press, pp. 36-53.

Pierre, J. and Peters, B. G. (2000) Governance, Politics and the State. Basingstoke: Macmillan.

Rhodes, R. A. W. 2000. 'Governance and Public Administration', in J. Pierre (ed.), Debating Governance.Oxford: Oxford University Press: 54-90.

Sanyal, Paromita. 2009. From credit to collective action: The role of microfinance

in promoting women's social capital and normative influence. American

Sociological Review 74 (4): 529-50.

Schout, A. and Jordan, A. 2005 'Coordinated European Governance: Self Organised or Centrally

Steered?'Public Administration, 83 (1), 201-20.

Schiavo, L, L. 2014. Governance, Civil Society, Governmentality. The 'Foucauldian Moment' in the Globalization Debate: Theoretical Perspectives, International Journal of Humanities and Social Science, 4 (13):181-197.

Stoker G. Governance as theory: five propositions. International social science journal, 50(155), 1998: 17?28

United Nations. 2006. Definition of basic concepts and terminologies in governanceand public administration. Committee of Experts on Public Administration Fifth session: New York.

World Bank. 1992. Governance and Development. World Bank Publication: Washington D.C